अर्थोद्घाटन

-प्रो. वीरसागर जैन

शब्द स्वयं नहीं बोलते हैं कि उनका क्या अर्थ है और क्या नहीं है | उसे तो विशेष प्रज्ञा एवं प्रशिक्षण से ही जाना जा सकता है | जीवन में अर्थोद्घाटन होना दुर्लभ है | पढ़ना-सुनना सरल है, पर उसका समीचीन अर्थ समझ में आना दुर्लभ है | प्रायः देखा जाता है कि लोग जीवन भर या तो खाली शब्दों को ही ढोते रहते हैं या उनका अन्यथा अर्थ समझकर उसके खंडन-मंडन में ही अपनी ऊर्जा नष्ट करते रहते हैं | अतएव यहाँ कतिपय बहुप्रयुक्त वाक्यों के अर्थोद्घाटन का एक लघु प्रयास किया जाता है | यथा-

1. **आत्मा भगवान है-** 'भगवान' शब्द भग+वान से बना है | 'भग' अर्थात् ज्ञान, 'वान' अर्थात् वाला | भगवान = ज्ञानवान, ज्ञानवाला | अत: 'भगवान' शब्द का अर्थ अन्य कुछ नहीं, ज्ञानवान है, चेतन है, जीव है | कातन्त्र, 279 में स्पष्ट कहा है- "भगं ज्ञानं | भगमस्यास्तीति भगवान् |" धवला, पुस्तक 13, वग्गणा खंड, पृष्ठ 346 पर भी आचार्य वीरसेन स्वामी ने लिखा है कि- "ज्ञानधर्ममाहात्म्यनि भग: सोऽस्याप्यस्तीति भगवान् |" जिनसहस्रनाम टीका, 154 में पंडित आशाधरसूरि ने भी यही कहा है- "भगो ज्ञानं परिपूर्णैश्वर्यं तप: श्री: वैराग्यं मोक्षस्य विद्यते स भगवान् |" (एकाक्षरी नाममाला के अनुसार भ= ज्ञान, ग=सुख अर्थात् जिसमें ज्ञान व सुख हो वह भगवान है |)
2. **हर आत्मा ईश्वर है-** 'ईश्वर' शब्द का अर्थ अन्य कुछ नहीं, समर्थ/सक्षम है | प्रत्येक आत्मा अपना कार्य करने में स्वयं समर्थ/सक्षम है, उसे किसी अन्य की आवश्यकता नहीं है, अत: ईश्वर है | अथवा उसका कार्य वह स्वयं ही करता है, अन्य कोई नहीं करता, कर ही नहीं सकता है, अत: वह ईश्वर है | हर आत्मा स्वतन्त्र एवं सम्प्रभुतासम्पन्न है |
3. **कण-कण में ईश्वर है-** यहाँ भी 'ईश्वर' शब्द का अर्थ उपर्युक्तानुसार ही है | सृष्टि का प्रत्येक कण अपना कार्य करने में स्वयं समर्थ/सक्षम है, उसे किसी अन्य की आवश्यकता नहीं है, अत: ईश्वर है | अथवा उसका कार्य वह स्वयं ही करता है, अन्य कोई नहीं करता, कर ही नहीं सकता है, अत: वह ईश्वर है | सृष्टि का कण-कण स्वतन्त्र एवं सम्प्रभुतासम्पन्न है, अत: ईश्वर है |
4. **भगवान/ईश्वर एक है-** यहाँ 'एक' शब्द के अर्थ में बड़ी भ्रान्ति होती है | प्रायः लोग 'एक' शब्द का अर्थ संख्या से एक समझ लेते हैं, किन्तु यहाँ 'एक' शब्द का समीचीन अर्थ 'एक' नहीं, अपितु 'एक जैसे' है | जैसे कि- हम सब एक हैं, मां के लिए चारों बेटे एक हैं, गुरुजी के लिए सब विद्यार्थी एक हैं, इत्यादि वाक्यों में होता है | लोक में 'एक जैसे' के लिए भी 'एक' शब्द का प्रयोग हम बहुधा करते हैं | भगवान/ईश्वर/परमात्मा/मुक्तात्मा को 'एक' कहने का आशय यह है कि उन सबमें स्वरूपत: कोई अंतर नहीं होता, वे सभी एक जैसे होते हैं, सारा अंतर संसार में ही होता है, मुक्त होने पर तो सब एक जैसे अनन्त ज्ञान आनन्द आदि गुणों के धारक होने से समान हो जाते हैं |
5. **आत्मा एक ही है-** यहाँ भी 'एक' शब्द का अर्थ एक जैसा ही है, जैसाकि उपर्युक्त बिन्दु में स्पष्ट किया गया है | इसके पीछे अभिप्राय यह भी है कि सब आत्माओं (जीवों) को समान समझो, ताकि राग-द्वेष समाप्त

हो, समता भाव जागृत हो | इस बात को परमात्मप्रकाश, द्वितीय अधिकार, दूहा 99 एवं107 में और उनकी संस्कृत-टीका में भी भलीभांति स्पष्ट किया गया है |

6. **आत्मा जड़ है-** कुछ लोग कहते हैं कि शुद्धात्मा/सिद्धात्मा ज्ञानरहित होते हैं, उनमें चेतना नहीं होती है, वे एक तरह से जड़ ही होते हैं, उनका संसारदशा में होनेवाला सारा ज्ञान मुक्त होने पर नष्ट हो जाता है| परमात्मप्रकाश दूहा 53 एवं अन्य अनेक ग्रन्थों के अनुसार यह कथन भी सत्य है, किन्तु इसका समीचीन अर्थ यह है कि उनका ज्ञान पूर्ण शुद्ध हो जाता है, उसमें संसारी जीवों जैसी रागद्वेषरूप विकल्पात्मक बुद्धि शेष नहीं रहती है अथवा उनका संसार दशा का क्षायोपशमिक या इन्द्रिय ज्ञान शेष नहीं रहता है, अत: वे जड़ हैं |
7. **भगवान शुद्ध-बुद्ध होते हैं-** यहाँ 'शुद्ध-बुद्ध' का अभिप्राय है- वीतराग-सर्वज्ञ | भगवान के दो मुख्य गुण होते हैं- वीतरागता एवं सर्वज्ञता | शास्त्रों में इस विषय पर विस्तृत विचार किया गया है कि भगवान नाम आदि से कुछ भी हो, पर उन्हें 'वीतराग' एवं 'सर्वज्ञ' अवश्य होना चाहिए | जो वीतराग और सर्वज्ञ नहीं हो वह भगवान नहीं हो सकता | यहाँ 'शुद्ध-बुद्ध' शब्द से भी हमारे पूर्वजों का वही आशय है | शुद्ध=वीतराग, बुद्ध=सर्वज्ञ |
8. **सब विधि/विधाता का खेल है-** यहाँ 'विधि' या 'विधाता' का अर्थ अन्य कुछ नहीं, कर्म है; जैसा कि आचार्य जिनसेनस्वामी ने महापुराण 4/37 में स्पष्ट कहा है- "विधि: स्रष्टा विधाता च दैवं कर्म पुराकृतम् | ईश्वरश्चेति पर्याया विज्ञेया: कर्मवेधस: ||" अर्थात् विधि, स्रष्टा, विधाता, दैव, पुराकृत और ईश्वर - ये सब कर्म के पर्यायवाची हैं | यही बात परमात्मप्रकाश, दूहा 1/66 और उसकी संस्कृतटीका में भी कही गई है कि आत्मा तो पंगु है, उसे यह विधि (कर्म) ही तीन लोक में यहाँ-वहाँ लाता / ले जाता है | (अयमात्मा ....विधिशब्दवाच्येन कर्मणा भुवनत्रये नीयते |)
9. **संसार की रचना ब्रह्मा ने की है-** यहाँ 'संसार' और 'ब्रह्मा' दोनों शब्दों के अर्थ में बड़ी भ्रान्ति हो रही है | 'संसार' का अर्थ यहाँ भौतिक 'लोक' या 'विश्व' नहीं है, अपितु चार गति चौरासी लाख योनियाँ है, अथवा उनमें जन्म-मरण करना है; जैसाकि कहा भी है- 'संसरणं संसार: परिवर्तनमित्यर्थ:' -सर्वार्थसिद्धि 2/10. 'ब्रह्मा' शब्द का अर्थ भी अन्य कुछ नहीं, 'आत्मा' है, जैसाकि सभी संस्कृतकोशग्रन्थों में लिखा है | इसप्रकार संसार की रचना ब्रह्मा ने की -इस वाक्य का समीचीन अर्थ हुआ कि यह आत्मा स्वयं ही अपने भावों से चार गति चौरासी लाख योनि रूप संसार को बनाता है और उसमें निरंतर जन्म-मरण करता रहता है | यही बात परमात्मप्रकाश दूहा 1/40 और उसकी ब्रह्मदेवसूरि कृत टीका में भी विस्तार से स्पष्ट की गई है- 'योऽयं शुद्धबुद्धैकस्वभावो जीवो ज्ञानावरणादिकर्महेतुं लब्ध्वा त्रसस्थावररूपं जगज्जनयति स एव परमात्मा भवति नान्य: कोऽपि जगत्कर्ता ब्रह्मादिरिति'| यहाँ जिसप्रकार आत्मा को 'ब्रह्मा' सिद्ध किया, उसीप्रकार 'विष्णु' एवं 'शिव' भी सिद्ध किया जा सकता है |
10. **परमात्मा सर्वव्यापक है-** यहाँ 'सर्वव्यापक' शब्द का अर्थ सब जगह रहनेवाला नहीं, अपितु सबको जाननेवाला है; जैसा कि प्रवचनसार, परमात्मप्रकाश आदि अनेक ग्रन्थों में सिद्ध किया है | सर्वव्यापक को 'सर्वगत' या 'सर्वग' भी कहते हैं, जो 'सर्वज्ञ' का ही पर्यायवाची है | परमात्मप्रकाश, प्रथम अधिकार, दूहा 41 एवं 52 में स्पष्ट कहा है कि जो जग के अन्दर रहता है और फिर भी जिसके अन्दर सारा जग रहता है,

उस कर्मरहित 'सर्वग' परमात्मा को जानो | इसी प्रकार प्रवचनसार गाथा 26 में भी परमात्मा को 'सर्वगत' सिद्ध किया है |

11. **लक्ष्मी कमल में रहती है-** यहाँ 'कमल' शब्द के अर्थ में भ्रान्ति हुई है | यहाँ 'कमल' शब्द का अर्थ कमल पुष्प नहीं है, अपितु अनासक्ति या निष्काम भावना है, क्योंकि कमल अनासक्ति का प्रतीक है | लक्ष्मी की प्राप्ति लक्ष्मी में आसक्त जीवों को नहीं, अपितु उससे अनासक्त जीवों को होती है | यह अनासक्ति का अद्भुत विज्ञान है | लोक में भी माया को छाया के समान कहा है, क्योंकि जो उसके पीछे भागता है वह उससे दूर भागती है- "माया छाया एक-सी, घटे-बढ़े छिन मांहि | इनकी संगति जो लगे, तिन्हें कबहु सुख नांहि ||" पद्मनन्दिपंचविंशतिका, ऋषभस्तोत्र, गाथा 46 में भी सिद्ध किया है कि लक्ष्मी 'कमल' में नहीं, भगवान के चरणकमल में रहती है- "अलियं कमले कमला कय-कमले तुह जिणिंद सा वसदि | णहकिरणणिहेण घडेंति णदजणे से कडक्खछडा ||"

12. **पिताजी वैकुण्ठ गये-** यहाँ 'वैकुण्ठ' शब्द का अर्थ अन्य कुछ नहीं, मात्र आयु पूरी होना है | 'वैकुण्ठ' अर्थात् वय + कुण्ठ | 'वय' अर्थात् आयु और 'कुण्ठ' अर्थात् समाप्त होना | इस प्रकार आयु समाप्त या पूर्ण होने का नाम ही वैकुण्ठ जाना है |

13. **भारत में तेतीस करोड़ देवी-देवता हैं-** एक बार हमारे विश्वविद्यालय में एक विद्वान् प्रोफेसर ने अपने व्याख्यान में बताया कि पहले भारत की कुल जनसंख्या तेतीस करोड़ थी और वे सभी नागरिक पूर्ण सदाचारी एवं नैतिक थे, रात्रिभोजन आदि तक से भी विरक्त रहते थे, कोई भी पापकार्य नहीं करता था, अत: ऐसा कहा जाता था कि यहाँ तेतीस करोड़ देवी-देवता हैं |

14. **यज्ञ करो स्वर्ग मिलेगा-** 'यज्ञ' शब्द का सरल अर्थ 'पूजा' है, अन्य कोई हिंसात्मक विधान नहीं | 'यज्ञ' या 'पूजा' करने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है | यहाँ यह भी सिद्ध होता है कि यज्ञ या पूजा से स्वर्ग ही मिलता है, मोक्ष नहीं |

15. **बलि दो तभी धर्म होगा-** 'बलि' शब्द का सरल अर्थ 'त्याग' है, अन्य कोई जीवहिंसात्मक कर्म नहीं | धर्म तभी होता है जब समस्त परिग्रह का त्याग कर दिया जाए | बिना त्याग के धर्म नहीं होता | 'बलि' का अर्थ 'समर्पण' भी है और उसका भी आशय पूर्वोक्तानुसार ही है | बिना समर्पण के जीवन में कभी भी किसी कार्य में सफलता प्राप्त नहीं होती | सफलता के लिए त्याग एवं समर्पण अनिवार्य हैं | 'बलि' शब्द का एक अर्थ 'पूजा' भी है, देखो परमात्मप्रकाश,दूहा 2/159-160.

16. **लक्ष्मी की पूजा करो-** यहाँ 'पूजा' शब्द के अर्थ में विशेष भ्रान्ति होती है | 'पूजा' शब्द के अनेक अर्थ रूप होते हैं, उनमें से कहाँ कौन-सा अर्थ उपयुक्त है -यह बहुत कम लोग समझ पाते हैं | ऐसे वाक्य भी बहुत अधिक पाए जाते हैं | जैसेकि- राजा की पूजा करनी चाहिए (स्वदेशे पूज्यते राजा), मूर्ख की पूजा करनी चाहिए (स्वग्रामे पूज्यते मूर्ख:), तुलसी की पूजा करनी चाहिए, स्त्री की पूजा करनी चाहिए (यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते),इत्यादि | सर्वत्र 'पूजा' शब्द का अर्थ एक ही नहीं है | 'लक्ष्मी की पूजा करो' जैसे कुछ वाक्यों में पूजा का अर्थ है कि उसका महत्त्व समझो, उसका विशेष ध्यान रखो,उसका कभी अनादर मत करो |

17. **सरस्वती माता की पूजा करो-** 'पूजा' शब्द के अर्थ पर तो हम ऊपर चर्चा कर चुके हैं, यहाँ केवल 'माता' शब्द के अर्थ का उद्घाटन करते हैं | 'माता' शब्द का प्रयोग अनेक वस्तुओं के साथ होता है | जैसेकि धरती माता, भारत माता, जिनवाणी माता, आदि | इन सबमें 'माता' शब्द का अर्थ सचमुच की 'जननी', 'स्त्री'

या 'देवी' नहीं समझना चाहिए | यह तो उपमा या मानवीकरण अलंकार मात्र है | 'माता' शब्द का अर्थ यहाँ अत्यंत पूजनीय, हितकारिणी, पोषिका, सम्पोषिका आदि समझना चाहिए |

18. **सदा सत्य बोलो-** यहाँ 'सत्य' शब्द के अर्थ में बड़ी भ्रान्ति होती है | प्रायः लोग समझते हैं कि जैसा है, वैसा बोलने का नाम सत्य बोलना है | परन्तु ऐसा नहीं है, क्योंकि इसके दो कारण हैं | एक तो जैसा है, वैसा वास्तव में बोला ही नहीं जा सकता, सम्भव ही नहीं है | दूसरे- जैसा है वैसा बोलने से स्व एवं पर दोनों का अहित हो सकता है, जैसाकि रत्नकरंड श्रावकाचार आदि ग्रन्थों में भी कहा है कि सत्य बोलना विपत्ति का कारण है- 'सत्यमपि विपदे' | अत: 'सत्य' शब्द का अर्थ यहाँ 'सत्ता' से न लगाकर 'प्रशंसा' से लगाना चाहिए | अभिप्राय यह हुआ कि जैसा है वैसा नहीं, अपितु जैसा बोलना उचित है, शास्त्रसम्मत है, वैसा बोलने का नाम सत्य है |
19. **गणेश शिव के पुत्र हैं-** यहाँ 'गणेश' शब्द का अर्थ है- गणधर, प्रथम गणधर, वृषभसेन और 'शिव' शब्द का अर्थ है- महादेव, आदिदेव, ऋषभदेव | चूँकि इस युग के प्रथम गणधर श्रीवृषभसेन तीर्थंकर ऋषभदेव के ही पुत्र थे, अत: लोक में यह कथन प्रचलित हो गया कि गणेश शिव के पुत्र हैं | (गौतमान्त गणेशिने)
20. **आत्मा शून्य है-** परमात्मप्रकाश, दूहा 55
21. **आत्मा अलख निरंजन है-**
22. **परमात्मा निर्गुण निराकार है-**
23. **परमात्मा सबसे प्रेम करता है-**
24. **हम सब परमात्मा की सन्तान हैं-**
25. **संसार झूठा/माया है-**
26. **गंगा में स्नान करो-** "आत्मा नदी संयमतोयपूर्णा, सत्यावहा शीलतटा दयोर्मि | तत्रावगाहं कुरु पांडुपुत्र, न वारिणा शुद्ध्यति चान्तरात्मा ||" – महाभारत